किसानों को जागरूक करें अधिकारी'

21 दिवसीय शरद प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

अमर उजाला ब्यूरो

भरतपुर। सरसों अनुसंधान निदेशालय द्वारा आयोजित 21 दिवसीय शरद प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन हो गया। रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविधालय के कुलपति डॉ. अरविन्द कुमार ने एक समारोह में किया।

कार्यक्रम में बोलते डा. अरविंद कुमार ने कहा कि खेती में किसी भी फसल से अधिक उत्पादन लेने के लिए अनुशंसित शस्य क्रियाओं को समय पर करना बहुत महत्वपूर्ण है। समय पर बुवाई सही मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग, समय पर रोगों एवं कीटों की पहचान करके उनके नियत्रंण करना, समय पर सिंचाई प्रबंधन करने से फसल का पूर्ण विकास होता है। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक और कृषि प्रसार अधिकारियों को समय पर कृषि क्रियाओं के बारे में किसानों को जागरूक करना चाहिये। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा वैज्ञानिकों और प्रसार अधिकारियों के क्षमता विकास के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का प्रतिवर्ष आयोजन किया जाता है।

शरद प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन पर मौजूद अधिकारी।

डॉ. अरविन्द कुमार ने कहा कि युवाओं को कृषि शिक्षा की ओर आकर्षित करने के लिए परिषद द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा है। उन्होंने प्रशिक्षण की महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ. अरविन्द कुमार ने कहा कि सरसों इस देश की महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है और उन्नत किस्मों एवं तकनीकी को अपनाकर इसका उत्पादन डेढ़ से दो गुणा किया जा सकता है। सरसों फसल विकास के बिना तेल की बढ़ती हुई मांग को पूरा नहीं किया जा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि किसानों को सही समय पर तकनीकी जानकारी मिले। इस अवसर पर पाठ्यक्रम निदेशक प्रधान वैज्ञानिक डॉ. पी. डी. मीना ने प्रशिक्षण के बारे में जानकारी ली तथा बताया कि इसमें उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार, हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर के विभिन्न संस्थानों के 16 वैज्ञानिकों और प्रसार अधिकारियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में परंपरागत एवं आधुनिक तकनीकों का तिलहनी फसलों कर के रोगों के प्रबंधन के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। इस दौरान प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न गांवों का भ्रमण कराया गया। निदेशालय द्वारा प्रदर्शित तकनीकों की जानकारी दी गयी। डॉ. अरविन्द कुमार ने वैज्ञानिकों के साथ निदेशालय पर किये जा रहे अनुसंधान प्रक्षेत्रों का अवलोकन किया। समापन कार्यक्रम का संचालन वैज्ञानिक डॉ. रीमा रानी ने किया। धन्यवाद, डॉ. विनोद कुमार ने दिया।

अमर उजाला 30 दिसम्बर 2015

युवाओं को कृषि शिक्षा के प्रति करें प्रेरित

शरद प्रशिक्षण कार्यक्रम

भरतपुर @ पत्रिका. सरसों अनुसंधान निदेशालय में मंगलवार को 21 दिवसीय शरद प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरविन्द कुमार के मुख्य आतिथ्य में हुआ।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि खेती में किसी भी फसल से अधिक उत्पादन लेने के लिए अनुशंसित शस्य क्रियाओं को समय पर करना महत्वपूर्ण है।उन्होंने कहा कि युवाओं को कृषि शिक्षा की ओर आकर्षित करने के लिए परिषद की ओर से प्रोत्साहन दिया जा रहा है। निदेशालय के निदेशषक डॉ. धीरेन्द्र सिंह ने कहा कि सरसों देश की महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है।सरसों फसल विकास के बिना तेल की बढ़ती हुई मांग को पूरा नहीं किया जा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि किसानों को सही समय पर तकनीकी जानकारी मिले।

पाठ्यक्रम निदेशक प्रधान वैज्ञानिक डॉ. पीडी मीना ने बताया कि प्रशिक्षण में उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार, हिमाचल एवं जम्मू कश्मीर के विभिन्न संस्थानों के 16 वैज्ञानिकों एवं प्रसार अधिकारियों ने भाग लिया।

भरतपुर. प्रशिक्षण में विचार व्यक्त करते अतिथि।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थीयों को विभिन्न गांवों का भ्रमण कराया गया। प्रशिक्षणार्थियों से सीखें गए ज्ञान को किसानों तक पहुंचाने का आह्वान किया गया। संचालन वैज्ञानिक डॉ. रीमा रानी ने किया।

राजस्थान पत्रिका 30 दिसम्बर 2015

'अधिक उत्पादन के लिए समय पर कृषि कार्य करें'

■ 21 दिवसीय शरद प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

भरतपुर (निस)। खेती में किसी भी फसल से अधिक उत्पादन लेने के लिए अनुशंसित शस्य क्रियाओं को समय पर करना बहुत महत्वपूर्ण है, समय पर बुआई, सही मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग, समय पर रोगों एवं कीटों की पहचान करके उनके नियत्रंण करना, समय पर सिंचाई प्रबंधन करने से फसल का पूर्ण विकास होता है।

पौधे अपनी पूरी उपज क्षमता प्रदान करते है। वैज्ञानिकों एवं कृषि प्रसार अधिकारियों को समय पर कृषि क्रियाओं के बारे में किसानों को जागरूक करना चाहिये। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा वैज्ञानिकों एवं प्रसार अधिकारियों के क्षमता विकास के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्योंकमो का प्रतिवर्ष आयोजन किया जाता है। यह बात रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविधालय के कुलपति डॉ. अरविन्द कुमार ने आज सरसों अनुसंधान निदेशालय में आयोजित 21 दिवसीय शरद प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुये कही। डॉ. अरविन्द कुमार ने कहा कि युवाओ को कृषि शिक्षा की ओर आकर्षित करने के लिए परिषद की ओर से प्रोत्साहन दिया जा रहा है। उन्होंने प्रशिक्षण की महत्व पर जोर देते हुए कहा कि इस तरह के प्रशिक्षण ज्ञानवर्धन एवं नवीन तकनीकों की जानकारी के लिए अति आवशक है। डॉ. कुमार ने निदेशालय द्वारा किसानों के लिए किये जा रहे प्रसार कार्यक्रमों की सरहाना की।

इस अवसर पर निदेशालय के निदेशक डॉ. अरविन्द कुमार ने कहा कि सरसों इस देश की महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है और उन्नत किस्मों एवं तकनीको को अपनाकर इसका उत्पादन डेढ़ से दो गुणा किया जा सकता है। सरसों फसल विकास के बिना तेल की बढ़ती हुई मांग को पूरा नही किया जा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि किसानों को सही समय पर तकनीकी जानकारी मिले। प्रशिक्षण में सीखे गये ज्ञान का प्रसार किसानों में करें और वैज्ञानिक तकनीके अपनाने के लिए उनको प्रोत्साहित करें।

इस अवसर पर पाठयक्रम निदेशक प्रधान वैज्ञानिक डॉ. पी. डी. मीना ने जानकारी दी कि इस 21 दिवसीय शरद प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन सरसों अनुसंधान निदेशालय द्वारा 9-29 दिसम्बर 2016 को किया गया था। यह प्रशिक्षण भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित था। इस कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार, हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू कश्मीर के विभिन्न संस्थानों के 16 वैज्ञानिकों एवं प्रसार अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में परम्परागत एवं आधुनिक तकनीकों का तिलहनी फसलों के रोगों के प्रबंधन के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थीयों को विभिन्न गांवों का भ्रमण कराया गया तथा निदेशालय द्वारा प्रदर्शित तकनीकों की जानकारी दी गयी।

राष्ट्रदूत 30 दिसम्बर 2015

कृषि क्रियाओं को अपनाएं अधिक उत्पादन पाएं

भरतपुर | सरसों अनुसंधान निदेशालय की ओर से 21 दिवसीय शरद प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर रानी लक्ष्मीबाई कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरविंद कुमार ने कहा कि खेती में किसी भी फसल से अधिक उत्पादन लेने के लिए अनुशंसित शस्य क्रियाओं को समय पर करना बहुत महत्वपूर्ण है, समय पर बुआई, सही मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करें।

समय पर रोगों एवं कीटों की पहचान करके उनके नियंत्रण करना, समय पर सिंचाई प्रबंधन करने से फसल का पूर्ण विकास होता है। पौधे अपनी पूरी उपज क्षमता प्रदान करते है। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों एवं कृषि प्रसार अधिकारियों को समय पर कृषि क्रियाओं के बारे में किसानों को जागरूक करना चाहिए। इस अवसर पर प्रधान वैज्ञानिक डॉ. . पीडी मीना, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार, हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू कश्मीर के विभिन्न संस्थानों के 16 वैज्ञानिक एवं प्रसार अधिकारी मौजूद थे। संचालन वैज्ञानिक डॉ. . रीमा रानी ने किया व आभार डॉ. . विनोद कुमार ने जताया।

दैनिक भास्कर 30 दिसम्बर 2015

शरद प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

न्यूज सर्विस/नवज्योति, भरतपुर

खेती में किसी भी फसल से अधिक उत्पादन लेने के लिए अनुशंसित शस्य क्रियाओं को समय पर करना बहुत महत्वपूर्ण है, समय पर बुआई, सही मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग, समय पर रोगों एवं कीटों की पहचान करके उनके नियत्रंण करना, समय पर सिंचाई प्रबंधन करने से फसल का पूर्ण विकास होता है और पौधे अपनी पूरी उपज क्षमता प्रदान करते है। वैज्ञानिकों एवं कृषि प्रसार अधिकारियों को समय पर कृषि क्रियाओं के बारे में किसानों को जागरूक करना चाहिये। भारतीय कृषि अनुसंधान परिष नई दिगी द्वारा वैज्ञानिकों एवं प्रसार अधिकारियों के क्षमता विकास के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का प्रतिवर्ष आयोजन किया जाता है। यह बात रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरविन्द कुमार ने मंगलवार को सरसों अनुसंधान निदेशालय में आयोजित 21 दिवसीय शरद प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए कही।

दैनिक नवज्योति 30 दिसम्बर 2015